RAWATSAR P.G. COLLEGE

'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)

DATE: 25 January 2025

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)

Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

सुशासन द्वारा महिला सशक्तिकरण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की भूमिका

डॉ. डिम्पल कुमारी, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय, भादरा (हनुमानगढ़) राजस्थान

Abstract

महिला सशक्तिकरण और सुशासन का सीधा संबंध समाज की प्रगति और समृद्धि से है। वर्तमान समय में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभर कर सामने आई है, जो महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, और आर्थिक सशक्तिकरण में सहायता मिल सकती है। उदाहरण स्वरूप, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्लेटफॉर्म्स महिलाओं को डिजिटल शिक्षा प्रदान कर सकते हैं, जिससे वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकती हैं। इसके अलावा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ और किफायती बनाती है, जिससे महिलाओं को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं मिल सकती हैं। रोजगार के क्षेत्र में भी, एआई महिलाओं को स्वरोजगार और रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है। सुशासन के सिद्धांतो जैसे पारदर्शिता, जवाबदेही, और समानत के आधार पर महिलाओं के सशक्तिकरण को गति दे सकता है। जब सरकारें और संस्थाएँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक का उपयोग करते हुए महिला सशक्तिकरण को प्राथमिकता देती हैं, तो यह न केवल उनकी सामाजिक स्थिति को सुधारता है, बल्कि समाज के विकास में भी योगदान करता है। इस प्रकार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से महिला सशक्तिकरण और सुशासन का सम्मिलित प्रयास समाज में वास्तविक परिवर्तन ला सकता है।

परिचय

महिला सशक्तिकरण किसी भी समाज और राष्ट्र की प्रगति का महत्वपूर्ण पहलू है। एक सशक्त महिला न केवल अपने परिवार बल्कि संपूर्ण समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बनती है। भारत जैसे देश में, जहां महिलाओं की भूमिका समाज के हर क्षेत्र में विस्तार कर रही है, उन्हें सशक्त बनाने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। विगत वर्षों में भारत सरकार ने महिला सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएं और नीतियां लागू की हैं। इनमें बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना, महिलाओं के लिए सुरक्षित मातृत्व अभियान, और कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न रोकने जैसे कानून शामिल हैं। हालांकि, तकनीकी युग में, विशेषकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बढ़ती भूमिका, महिला सशक्तिकरण के लिए नए अवसर प्रदान कर रही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सुशासन का परिचय

कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंप्यूटर और मशीनों में वह क्षमता विकसित करती है, जिससे वे मानव जैसे सोचने, सीखने और समस्याओं का समाधान करने में सक्षम बनती हैं। दूसरी ओर, सुशासन का उद्देश्य एक ऐसा प्रशासनिक तंत्र स्थापित करना है जो जवाबदेही, पारदर्शिता, समावेशिता और प्रभावशीलता पर आधारित हो।

जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता को सुशासन के साथ जोड़ा जाता है, तो यह पारंपरिक नीतियों को डिजिटल रूप से सक्षम बनाता है, जिससे महिला सशक्तिकरण को नए आयाम मिलते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता न केवल नीति निर्माण और उसके कार्यान्वयन में सुधार करता है, बल्कि महिलाओं के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव लाने में भी सहायक सिद्ध होता है।

महिला सशक्तिकरण और सुशासन का महत्व

महिला सशक्तिकरण का मतलब केवल महिलाओं को उनके अधिकार प्रदान करना नहीं है, बल्कि उन्हें शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवाएं, और निर्णय लेने की प्रक्रिया में समान अवसर प्रदान करना भी है। इसके साथ–साथ, सुशासन का उद्देश्य एक ऐसा पारदर्शी और जिम्मेदार प्रशासन स्थापित करना है जो सभी नागरिकों, विशेषकर महिलाओं की आवश्यकताओं और चिंताओं को संबोधित करे।

महिला सशक्तिकरण की अवधारणा

महिला सशक्तिकरण को मुख्य रूप से निम्नलिखित स्तंभों पर आधारित माना जाता है–

1. शिक्षा– यह सशक्तिकरण की नींव है। एक शिक्षित महिला अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती है और समाज में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकती है।
2. आर्थिक स्वतंत्रता– रोजगार और स्वरोजगार के अवसर महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाते हैं।
3. स्वास्थ्य और कल्याण– महिलाओं का स्वास्थ्य उनकी भलाई और उत्पादकता के लिए महत्वपूर्ण है।
4. सामाजिक और राजनीतिक भागीदारी– महिलाएं समाज और राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाएं, यह आवश्यक है।

सुषासन की भूमिका

सुषासन का मुख्य उद्देष्य ऐसी नीतियां बनाना और लागू करना है, जो समाज के सभी वर्गों की भलाई

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

को सुनिष्चित करें। इसके अंतर्गत पारदर्षिता, जवाबदेही, और समावेषिता को प्राथमिकता दी जाती है। महिलाओं के सषक्तिकरण में सुषासन की भूमिका को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है–

- महिला केंद्रित नीतियों का निर्माण और क्रियान्वयन।
- महिलाओं की सुरक्षा और उनके अधिकारों की रक्षा।
- महिलाओं के लिए षिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराना।

जब सुषासन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का संयोजन होता है, तो यह महिला सषक्तिकरण के लिए एक नई दिषा प्रदान करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का परिचय

AI यानि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऐसी तकनीक है जो कंप्यूटर और मशीनों को मानव जैसी सोच, विश्लेषण और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग आज स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा, और प्रशासनिक क्षेत्रों में हो रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रमुख उपयोग

1. डेटा विश्लेषण– कृत्रिम बुद्धिमत्ता बड़े डेटा सेट का विश्लेषण करके उपयोगी जानकारी प्रदान करता है।
2. भविष्यवाणी– कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित एल्गोरिदम संभावित समस्याओं की भविष्यवाणी कर सकते हैं।
3. स्वचालन– कृत्रिम बुद्धिमत्ता जटिल प्रक्रियाओं को स्वचालित और सरल बना सकता है।
4. व्यक्तिगत समाधान– कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रत्येक व्यक्ति की जरूरतों के अनुसार समाधान प्रदान करता है।

महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता कई समस्याओं को हल करने और महिलाओं को सशक्त बनाने में सहायक हो सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा महिला सशक्तिकरण के मुख्य क्षेत्र

1. महिलाओं की सुरक्षा और अपराध रोकथाम

महिलाओं के खिलाफ अपराधों की रोकथाम के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकों का उपयोग एक महत्वपूर्ण कदम है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरण और एल्गोरिदम, अपराध की घटनाओं का विश्लेषण कर संभावित खतरों की पहचान करने में मदद कर सकते हैं। उदाहरणस्वरूप–

- फेसियल रिकग्निशन तकनीक– सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित कैमरे लगाए जा सकते हैं। ये तकनीक संदिग्ध गतिविधियों का पता लगाने में सक्षम है।
- प्रीडिक्टिव पॉलिसिंग– कृत्रिम बुद्धिमत्ता अपराध रिकॉर्ड और पैटर्न का विश्लेषण करके संभावित अपराध क्षेत्रों और समय की भविष्यवाणी करता है, जिससे कानून व्यवस्था मजबूत होती है।
- सुरक्षा ऐप्स– कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित मोबाइल ऐप्स, जैसे सेफ्टी पिन, महिलाओं को उनकी लोकेशन ट्रैक करने और संकट की स्थिति में तत्काल सहायता प्रदान करने की सुविधा देते हैं।

2. शिक्षा और कौशल विकास

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला दी है, और यह महिलाओं के सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभा रहा है।

- ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉम–ं कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्लेटफॉर्म, जैसे कोर्सेरा और खान एकेडमी, महिलाओं को घर बैठे नई तकनीकों और कौशलों का ज्ञान प्रदान करते हैं।
- वैयक्तिकृत सीखने की सुविधा– कृत्रिम बुद्धिमत्ता सिस्टम प्रत्येक छात्रा की आवश्यकता और क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार कर सकते हैं, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी हो जाती है।
- भाषा अनुवाद और सुलभता– ग्रामीण और वंचित महिलाओं के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुवाद टूल भाषा बाधा को दूर करने में मदद करते हैं।

3. आर्थिक सशक्तिकरण

महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाना सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण हिस्सा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस दिशा में कई नए अवसर प्रदान करता है।

- डिजिटल मार्केटिंग और ई–कॉमर्स– कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्लेटफॉर्म महिलाओं को अपने उत्पादों और सेवाओं की वैश्विक स्तर पर मार्केटिंग करने की सुविधा देते हैं।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

- वित्तीय समावेशन– कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित वित्तीय सेवाएं, जैसे माइक्रोलोन और डिजिटल बैंकिंग, महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाती हैं।
- स्वरोजगार का प्रोत्साहन– कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित ऐप्स, जैसे शोपीफाई, महिलाओं को अपने व्यवसाय शुरू करने और उसे प्रबंधित करने में मदद करते हैं।

4. स्वास्थ्य सेवाएं

स्वास्थ्य सुविधाओं तक महिलाओं की पहुंच को सुदृढ़ करने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका महत्वपूर्ण है।

- मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य– कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित हेल्थकेयर ऐप्स महिलाओं को गर्भावस्था और मातृत्व से जुड़ी सलाह और जानकारी प्रदान करते हैं।
- रोग निदान और उपचार– कृत्रिम बुद्धिमत्ता सिस्टम महिलाओं की स्वास्थ्य समस्याओं का त्वरित निदान और उचित उपचार सुझाने में सक्षम हैं।
- मानसिक स्वास्थ्य– कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चौटबॉट्स और काउंसलिंग प्लेटफॉर्म महिलाओं को मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान करने में मदद करते हैं।

5. राजनीतिक सशक्तिकरण

कृत्रिम बुद्धिमत्ता महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को भी बढ़ावा देता है।

- डेटा विश्लेषण– कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग महिला उम्मीदवारों और मतदाताओं की भागीदारी और उनकी जरूरतों के आकलन के लिए किया जा सकता है।
- नीति निर्माण में भागीदारी– कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित टूल्स महिलाओं को नीतिगत चर्चाओं और निर्णय प्रक्रियाओं में शामिल होने का अवसर प्रदान करते हैं।
- सशक्त प्रचार अभियान– कृत्रिम बुद्धिमत्ता महिलाओं के लिए प्रभावी और लक्षित चुनावी प्रचार रणनीतियां तैयार करने में सहायक है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सुशासन के आठ तत्व

कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकें सुशासन के आठ प्रमुख तत्वों को और अधिक सशक्त बनाती हैं–

1. पारदर्शिता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित डैशबोर्ड और डेटा विजुअलाइजेशन टूल प्रशासनिक प्रक्रियाओं को पारदर्शी बनाते हैं।

2. जवाबदेही

कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रशासनिक अधिकारियों को उनके कार्यों के लिए उत्तरदायी ठहराने में मदद करता है।

3. समावेशिता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता महिलाओं सहित समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रशासनिक निर्णयों में शामिल करने का अवसर प्रदान करता है।

4. सक्षमता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता जटिल प्रशासनिक प्रक्रियाओं को स्वचालित और सरल बनाता है, जिससे कार्यक्षमता बढ़ती है।

5. प्रभावशीलता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग समय पर और सटीक निर्णय लेने में सहायक होता है।

6. अनुक्रियात्मकता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता नागरिकों की समस्याओं का त्वरित समाधान प्रदान करने में सक्षम है।

7. कानून का शासन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित निगरानी प्रणाली कानून के उल्लंघनों को रोकने और उन्हें दंडित करने में प्रभावी है।

8. सहभागिता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता महिलाओं को नीतियों और योजनाओं के निर्माण और क्रियान्वयन में भाग लेने का मंच प्रदान करता है।

महिला सशक्तिकरण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की चुनौतियां

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के बावजूद, महिला सशक्तिकरण के लिए कई चुनौतियां बनी हुई हैं–

- डिजिटल खाई– ग्रामीण और वंचित महिलाओं तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता की पहुंच सीमित है।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

- भाषा और साक्षरता– अधिकांश कृत्रिम बुद्धिमत्ता टूल अंग्रेजी पर आधारित हैं, जो गैर–अंग्रेजी भाषी महिलाओं के लिए बाधा है।
- डेटा गोपनीयता– कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरणों में महिलाओं की व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा एक गंभीर चिंता का विषय है।
- नैतिकता और पूर्वाग्रह– कृत्रिम बुद्धिमत्ता सिस्टम में पूर्वाग्रह और भेदभाव की संभावना होती है, जो महिलाओं के लिए असमानता उत्पन्न कर सकता है।

केस स्टडी– महिला सशक्तिकरण के सफल उदाहरण

कुछ देशों और क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण को लेकर सफल उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं, जो दिखाते हैं कि जब सही नीतियाँ और रणनीतियाँ अपनाई जाती हैं, तो महिलाएँ समाज में बड़ी भूमिका निभा सकती हैं।

भारत– भारत में कई योजनाएँ महिला सशक्तिकरण के लिए लागू की गई हैं। उदाहरण के तौर पर, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना ने समाज में लड़कियों के प्रति जागरूकता फैलाने और उनकी शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी प्रकार, महिला सुरक्षा के लिए कई मोबाइल ऐप्स जैसे नर्भया ऐप भी लॉन्च किए गए हैं।

स्कैंडिनेवियाई देश– नॉर्डिक देशों में लैंगिक समानता के मामले में कई सफल उदाहरण मिलते हैं। वहाँ महिलाओं को कार्यस्थल, राजनीति, और समाज के अन्य क्षेत्रों में बराबरी का अवसर प्राप्त है, और इसके परिणामस्वरूप वहां की महिलाएँ समाज के हर क्षेत्र में योगदान दे रही हैं।

भविष्य की दिशा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सुशासन के संयोजन से महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में और भी अधिक प्रगति हो सकती है।

1. तकनीकी साक्षरता अभियान– महिलाओं को कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकों का उपयोग करने के लिए शिक्षित और प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
2. ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी– कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित योजनाओं और परियोजनाओं में ग्रामीण महिलाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
3. भाषाई समावेशन– कृत्रिम बुद्धिमत्ता टूल्स को क्षेत्रीय भाषाओं में विकसित करना चाहिए।
4. नैतिकता और जिम्मेदारी– कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकों के विकास और उपयोग में नैतिक मानकों और गोपनीयता नीतियों का पालन अनिवार्य होना चाहिए।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सुशासन का मेल महिला सशक्तिकरण के लिए एक क्रांतिकारी कदम है। यह महिलाओं को उनके अधिकारों और अवसरों के प्रति जागरूक करने के साथ–साथ उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाने का मार्ग प्रशस्त करता है। हालांकि, इसके लिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक सभी महिलाओं तक समान रूप से पहुंचे और इसका उपयोग नैतिक और सुरक्षित तरीके से हो। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सुशासन के संयुक्त प्रयासों से भारत में महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक नई और सशक्त पहल हो सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ

- जनता के लिए रिपोर्ट, प्रधानमंत्री कार्यालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ।
- सुशासन एवं मीडिया की भूमिकारू पूनम कुमारी, योजना हिन्दी, जनवरी 2013 वर्ष– अंक 1
- विश्व बैंक, द्वितीय रिपोर्ट, ''विकास और अभिशासन–1992।
- सिंह जनक, भारतीय लोक प्रशासन संस्थान नई दिल्ली की अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका, जुलाई–दिसम्बर 2021 ।
- मनुस्मृति, 3/56 ।
- इण्डिया टूडे, सितम्बर, 2024
- नैला कबीर (2019) ।
- वी. नारायण (2023) ।
- जी. पैलिनीथुराई, आइ.जे.पी.ए. नई दिल्ली (जन.–मार्च 2019) ।
- वार्षिक प्रतिवेदन, वर्ष 2011–12 ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ।